

Чамакам

Анувака 9

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽकर्श्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च
मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शकवरीरञ्जुलयोदिशश्च मे यज्ञेन
कल्पन्तामृकच मे साम च मे स्तोमश्च मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च
मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥ १६॥



агнищчा мс гхармашчा м[े]ркашчा м[े] с[ु]र्याशчा ме пр[ा]нашчा ме щвам[े]дхашчा
ме притх[ि]в[ी] ч[ा] медитищчा м[े] дитищчा м[े] д्यяущчा м[े] щакв[ा]ри р^ङгул[ा]йо^०
диш[ा]шчा ме ягнен[ा] кальпант[ा]мрикчा м[े] с[ा]म[ा] ч[ा] м[े] стомाशчा м[े] яджु[॒]щчा ме^०
д[ी]кша ч[ा] м[े] тапाशчा ма р[ि]тущчा ме вратам[ा] ч[ा] ме хор[ा]трай^०бр^० вришть[ा]
бр[ि]хадратхант[ा]ре ч[ा] ме ягнен[ा] кальпет[ा]म॥ १६॥

Да зажгу я жертвенный огонь, да совершу я религиозный обряд под названием Гхарма и жертвоприношения под названием Арка и Сурья. Да вознесу я должные подношения пране, да совершу я жертвоприношение коня (Ашвамедха). Пусть боги Притхви, Адити, Дити и Дьяус будут милостивы ко мне. Да будет поэтический размер под названием саквари произнесен правильно. Пусть пальцы (части Космической Личности) и направления пространства будут пригодны для моих жертвенных обрядов. Да будут Риг, Сама и Яджур Веды и гимн под названием Стома правильно повторяться в месте проведения жертвенных обрядов. Да буду я должностным образом выполнять аскезу. Да будут времена года благоприятны для моих жертвенных обрядов. Да буду я выполнять физическую аскезу (такую как пост ночью). Да будет дождь идти день и ночь, чтобы мой урожай был изобиленым. Да будут гимны под названием Брихад и Ратхантара правильно повторяться во время жертвенных ритуалов.

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे



агниш्चां मे ग्हार्माष्चां मेर्काष्चां मे सूर्याष्चां मे

प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे



प्राणाष्चां मे श्वामेधाष्चां मे प्रित्यिवी चा मेऽदितिष्ठापनाष्चां मे श्वामेधाष्चां मे प्रित्यिवी चा मेऽदितिष्ठापनाष्चां मे

द्यौश्च मे शक्वरीरङ्गुलयोदिशश्च मे



द्यायुष्चां मे श्वामेधाष्चां मे रांगुलायोदिशाष्चां मे

यज्ञेन कल्पन्तामृकच मे सामं च मे स्तोमश्च मे यजुरश्च मे



यज्ञेन कल्पन्तामृकचां मे सामां चा मे स्तोमाष्चां मे यजुराष्चां मे

दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे



दीक्षा चां मे तपाष्चां मा रितुष्चां मे

व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या



व्रतामचां मे खोरात्रायोर्ब्रिष्ट्यां

बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्



ब्रिहद्रथन्तरे चां मे यज्ञेन कल्पेताम्